खुदा ने तो इन्सान को नवाज़ा हर ताकत से, कमजोर बनाया खुद को इन्सान ने।

ईश्वर की तो झोली ने बरसाई सिर्फ खुशियाँ, दुःखों की तो रचना की स्वयं इन्सान ने।।

परमेश्वर का तो निर्माण साहसी था, डरपोक खुद को तब्दील किया इन्सान ने ।।

एक बच्चा जब जन्म लेता है उस समय उसके अन्दर ईश्वर के द्वारा दी गई हर वो ताकत होती है जिससे वह अपने जीवन को जैसा चाहे वैसा गढ़ सके। वह पूर्ण रूप से निडर जन्म लेता है, उसके अन्दर किसी प्रकार का कोई डर नहीं पनपा होता है। इस क्षण में उसके पास केवल और केवल खुशियों का भण्डार होता है, दुःख नाम के शब्द से तो उसका दूर–दूर तक कोई रिश्ता–नाता नहीं होता है।

कमजोरियाँ, डर, दुःख को तो वह स्वयं ही अपने अन्दर अपनी उम्र के बढ़ते–बढ़ते विकसित करता है। इन्सान ने जिस सबसे बड़े गुण को अपने अन्दर जनम दिया है वह यह है कि वो अपने आसपास उपस्थित सकारात्मक धारणाओं पर ध्यान न देते हुए सभी नकारात्मक विचारों को एक के बाद एक करके अपने अन्दर जन्म देने लगता है। वह जाने–अन्जाने में एक ऐसे भँवर में फँसता चला जाता है जिससे उसका बचकर निकल पाना असम्भव होता है। उसके अन्दर एक ऐसी बीमारी जन्म ले लेती है जो कि लाइलाज होती है। इन सभी बातों के लिए दोषी ठहराया जाता है तो उस परवरदिगार को, जिसने जब सृष्टि की रचना करना शुरु की तो सबसे पहले खनिज पदार्थो का विकास किया, फिर उन्होंने पेड़, पौधे, फल–फूल को विकसित किया इसके उपरान्त जब उन्हें अपने बनाये हुए जहान में सूनापन सा लगा और विचार आया कि कुछ तो ऐसा भी होना चाहिए जिससे कुछ उछलकूद होती रहे, शोरगुल हो और मेरे जहान रूपी घर में किसी प्रकार का कोई सन्नाटा न रहे, तब उस ईश्वर ने जीव–जन्तुओं, कीड़े–मकोड़ो आदि का अस्तित्व कायम किया। यह सब करते–करते सृष्टि के उस रचयिता ने सोचा कि मैं कब तक और कैसे इतना सबकुछ बना पाऊँगा, निर्माण तो बहुत सारी अनोखी चीजों का होना है लेकिन मैं अकेला कहाँ तक यह सब कर पाऊँगा, कोई तो ऐसा हो जिसमें मेरी जैसी अनोखी नामुमकिन, नई–नई वस्तुओं का निर्माण करने की क्षमता हो, जो हर वह कार्य कर सके जिनकी मैने कल्पना कर रखी है, तब उस परम्पिता परमेश्वर को ख्याल आया इन्सान नामक प्रजाति को बनाने का और उसने इन्सान को इस धरती पर बची हुई हर रचना का निर्माण करने हेतु भेज दिया।

लेकिन आज वह परम्पिता परमेश्वर यह देखकर खुद ही भ्रमित है कि जिस रचना में मैने केवल और केवल गुण डाले थे, मेरी उसी रचना में अवगुणों का भण्डार कहाँ से संगृहीत हो गया। यह एक कटु सत्य है कि वाकई कमजोरी, दुःख, भय यह सब इन्सान की अपनी उत्पत्ति है

इसमें ईश्वर का जरा भी योगदान या दोष नहीं है। एक नवजात शिशु में यह सारे अवगुण नहीं होते हैं, यदि उसमें डर जैसी कोई चीज होती तो क्या वह किसी सर्प के अपने पास से गुजरने पर डरता नहीं, किन्तु ऐसा नहीं होता है वह नवजात शिशु तो उस सर्प को पकड़ने के लिए अपना हाथ आगे बढ़ाता है।

डर जैसी कोई भी जीच अगर ईश्वर की देन होती है तो क्या वह इन्सान में समान रूप से नहीं पायी जाती ? हर इन्सान उस एक ही चीज से भयभीत नहीं रहता ? परन्तु ऐसा नहीं है हर इन्सान का भय अलग–अलग होता है। कोई ऊँचाई से डरता है तो कोई पानी से, किसी को अंधेरे से डर लगता है तो कोई जानवर से डरता है, बल्कि हकीकत तो यह है कि एक इन्सान जिस रचना से डरता है दूसरे व्यक्ति के लिए वह रचना एक खिलौना समान होती है। एक इन्सान पानी से डरता है और वहीं दूसरा इन्सान एक बड़ा तैराक होता है, किसी व्यक्ति को एक जानवर से डर लगता है जबकि वही जानवर दूसरे व्यक्ति के घर के सदस्य जैसा होता है। तो हम यह कैसे कह सकते हैं कि डर हमारे अन्दर जन्म से ही होता है, यह भगवान की देन है। ईश्वर के पास इतना समय नहीं है कि वह भिन्न–भिन्न इन्सानों में अलग–अलग चीजों का डर भरे। यह तो सिर्फ और सिर्फ हम इन्सानों की अपनी उपज है जो हमें हमारे पूर्वजों से विरासत में मिली है और हम अपनी भविष्य की पीढ़ियों के लिए इकट्ठा कर रहे हैं।

यदि हमें खुद को, अपने परिवार को, अपने देश को बल्कि इस पूरे संसार को मजबूत और कामयाब देखना है तो हमें सबसे पहले अपने अन्दर मौजूद दुनिया की हर नामुकिन रचना को मुमकिन करने वाली ताकत को पहचानना होगा, अन्यथा परम्पिता परमेश्वर द्वारा प्रदान किया गया यह कीमती जीवन व्यर्थ हो जायेगा।

Fear is not your connatural trait .....it is just the negative picture, that you have painted about any object.